Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

भारत-संयुक्त अरब अमीरात संबंध: 2014 से वर्तमान तक

लोकेंद्र सिंह शक्तावत

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *लोकेंद्र सिंह शक्तावत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17920338

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र 2014 से वर्तमान (2025) तक भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के द्विपक्षीय संबंधों के विकास, विस्तार और रणनीतिक गहराई का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्ष 2014 के बाद दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों ने अभूतपूर्व गति पकड़ी है, जिसका मुख्य कारण दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के बीच बढ़ती नज़दीकियाँ, उच्च-स्तरीय राजनीतिक यात्राएँ, रणनीतिक साझेदारी तथा आर्थिक एवं सुरक्षा हितों का सामंजस्य रहा है। इस शोध में पाया गया है कि 2015 के बाद दोनों देशों के बीच संबंध केवल व्यापारिक दायरे तक सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि रक्षा सहयोग, आतंकवाद-निरोध, ऊर्जा सुरक्षा, अवसंरचना निवेश, प्रवासी भारतीय कल्याण, अंतरिक्ष सहयोग तथा डिजिटल कनेक्टिविटी तक भी विस्तृत हुए हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यूएई अब भारत का एक प्रमुख रणनीतिक साझेदार बन चुका है। व्यापार के क्षेत्र में यूएई भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बनकर उभरा है। साथ ही, यह प्रवासी भारतीयों के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर बनकर सामने आया है। वर्ष 2022 में व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA) दोनों देशों के आर्थिक संबंधों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने व्यापार को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। इसके साथ ही, खाड़ी क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव ने दोनों देशों को सुरक्षा और रक्षा सहयोग गहरा करने की दिशा में प्रेरित किया है। यह शोध-पत्र तर्क देता है कि 2014 के बाद भारत–यूएई संबंधों का स्वरूप मात्र "व्यवसायिक साझेदारी से आगे बढ़कर "व्यापक रणनीतिक सहयोग"में बदल गया है। वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में यह साझेदारी न केवल क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करती है, बल्कि भारत की पश्चिम एशिया नीति को नई दिशा भी प्रदान करती है। यह शोध-पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584- 184X
- ✓ **Received:** 18-11-2025
- ✓ **Accepted:** 08-12-2025
- ✓ **Published:** 13-12-2025
- ✓ **MRR:3(12):**2025;01-05
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite this Article

लोकेंद्र सिंह शक्तावत. भारत-संयुक्त अरब अमीरात संबंध: 2014 से वर्तमान तक. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च एंड रिव्यू. 2025;3(12):01-05.

मुख्य शब्द: भारत–यूएई संबंध, व्यापक रणनीतिक साझेदारी, पश्चिम एशिया नीति, द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश, CEPA (व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता)

© 2025 लोकेंद्र सिंह शक्तावत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

पश्चिम एशिया के साथ भारत के गहन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध हैं। इस क्षेत्र के साथ भारत के सभ्यतागत संपर्क लिखित इतिहास की शुरूआत से ही चले आ रहे हैं। प्राचीनकाल में सिंधु-डिल्मन सभ्यता के समय से दोनों पक्षों के बीच संपर्क सतत रूप से जारी हैं तथा आधुनिक काल में उपनिवेशवाद की खिलाफत में दोनों पक्षों का साझा विश्वास है। 20वीं शताब्दी के उतरार्ध में ये संबंध और सुदृढ़ हुए क्योंकि दोनों पक्ष अपने उपनिवेशी शासन से बाहर निकले और नई सच्चाइयों को बुनना, सामान्य विकास समस्याओं तथा 21वीं शताब्दी की नई चुनौतियों से निपटने के लिए समझ एवं तालमेल के नए सेतुओं का निर्माण करना शुरू किया। वार्ता एवं परामर्श के माध्यम से सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा प्राप्त करने, बनाए रखने और बढ़ाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता में साझे विश्वास की बुनियादी रूपरेखा है। भारत के लिए पश्चिम एशिया हमारे विस्तारित पड़ोस का अंग है और इस प्रकार, इस क्षेत्र में निरंतर शांति एवं स्थिरता भारत के सामरिक हित में है। ऐतिहासिक, राजनीतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारणों के साथ-साथ वर्तमान सुरक्षा सरोकारों और ऊर्जा आवश्यकताओं आदि के कारण पश्चिम एशिया भारत की विदेश नीति में सदैव विशिष्ट महत्व का क्षेत्र रहा है।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) संबंध: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के संबंधों का इतिहास प्राचीन काल से ही व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मानवीय रिश्तों से जुड़ा रहा है। अरब सागर के तटवर्ती क्षेत्रों से लेकर राजस्थान और गुजरात के मरुस्थलों तक, भारतीय व्यापारी और शिल्पकार सदियों से खाड़ी देशों के साथ सक्रिय संपर्क बनाए हुए थे। मोती, मसाले, वस्त्र और आभूषण के बदले अरब देशों से मोती, खजूर और अन्य वस्तुएँ भारत लायी जाती थीं। यही परंपरा आधुनिक काल में ऊर्जा, निवेश, प्रवासी भारतीय और रणनीतिक सहयोग के रूप में विकसित हुई। 2014 के बाद से भारत-यूएई संबंधों ने जिस तीव्रता और गहराई को प्राप्त किया, वह न केवल द्विपक्षीय संबंधों के क्षेत्र में बल्कि वैश्विक कूटनीति के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत और यूएई के संबंधों की जड़ें समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क में गहराई से निहित हैं। इस्लामी सभ्यता के उत्कर्ष काल में भारतीय उपमहाद्वीप से खाड़ी देशों तक ज्ञान, साहित्य और विज्ञान का आदान-प्रदान हुआ। औपनिवेशिक काल में भी भारतीय मजदूर, विशेषकर गुजरात और केरल से, खाड़ी देशों में कार्यरत रहे। 1971 में यूएई की स्थापना के बाद भारत ने उसे मान्यता देने वाले शुरुआती देशों में स्थान पाया। इसके पश्चात, तेल व्यापार और भारतीय प्रवासी समुदाय आदि के कारण दोनों देशों के संबंध और भी अधिक प्रगाढ़ हुए हैं।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) संबंध: समसामयिक संदर्भ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत की "लुक वेस्ट" नीति को और मजबूती मिली। 2015 में प्रधानमंत्री मोदी की ऐतिहासिक अबू धाबी यात्रा ने 34 वर्षों बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यूएई यात्रा का रिकॉर्ड बनाया और संबंधों में नई ऊर्जा का संचार किया। उसके बाद से दोनों देशों के बीच रक्षा, सुरक्षा, व्यापार, निवेश, ऊर्जा और सांस्कृतिक सहयोग के क्षेत्र में कई निर्णायक कदम उठाए गए। 2017 में यूएई के क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बने, जिसने रणनीतिक साझेदारी को नए आयाम दिए। 2019 में प्रधानमंत्री मोदी को यूएई के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "Order of Zayed" से सम्मानित किया गया, जो संबंधों की गहराई का प्रतीक है।

बढ़ते भारत-यूएई आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में गहराई और तेजी से विविधीकरण को स्थिरता एवं मजबूती देने में योगदान करते हैं। भारत और संयुक्त अरब अमीरात एक दूसरे के प्रमुख व्यापारिक भागीदार रहे हैं। दोनों देशों के बीच उत्कृष्ट द्विपक्षीय आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध समय के साथ लगातार बढ़ते और गहरे होते रहे हैं। भारत और यूएई के बीच द्विपक्षीय व्यापार 1970 के दशक में 18 करोड़ डॉलर प्रति वर्ष से लगातार बढ़कर वित्त वर्ष 2019-20 में 60 अरब डॉलर (4.55 लाख करोड़ रुपये) हो गया और इस प्रकार यूएई भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। वर्ष 2019-20 में यूएई को 29 अरब डॉलर के निर्यात के साथ यूएई भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य भी है जबकि यूएई से भारत का आयात मूल्य लगभग 30 अरब डॉलर था जिसमें 21.83 एमएमटी (यूएस 10.9 अरब डॉलर) कच्चा तेल शामिल है। यूएई भारत के लिए ऊर्जा आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और वह सामरिक पेट्रोलियम भंडार, अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम पेट्रोलियम क्षेत्रों के विकास में भारत का एक प्रमुख भागीदार है।

डेजर्ट ईगल जैसे नियमित सैन्य अभ्यासों के माध्यम से क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए समुद्री सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। दोनों देश संयुक्त रूप से चरमपंथ और सीमा पार आतंकवाद सहित सभी प्रकार के आतंकवाद से लड़ने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त कर चुके हैं। भारत और यूएई ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ाया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) ने यूएई का पहला नैनो उपग्रह नईफ-1 अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया है।

संयुक्त अरब अमीरात और भारत के बीच परंपरागत सौहार्दपूर्ण संबंधों में 2020 में और मजबूती आयी और दोनों देशों के शीर्ष नेतृव के बीच लगातार द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय मोर्चों कोविड पश्चात काल में संबंधों को बढ़ाने के बारे में बातचीत हुई जिसमें खाड़ी के इस देश में रहने वाले भारतीय समुदाय के कल्याण का मुद्दा भी शामिल है। दोनों देशों के बीच मजबूत होते रणनीतिक संबंधों की झलक भारत के दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों की यात्राओं से मिलती है।

नवंबर, 2020 में विदेश मंत्री एस. जयशंकर और दिसंबर में सेना प्रमुख रक्षा एम. एम. नरवणे दुबई की यात्रा पर थे। जयशंकर ने संयुक्त अरब अमीरात के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात कर व्यापार, निवेश, ढांचा, ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा और रक्षा सहित दोनों देशों के बीच के मौजूदा विस्तृत रणनीतिक साझेदारी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने आबू धाबी के शहजादे शेख मोहम्मद बिन जायद अल नह्यान और दुबई के शासक, प्रधानमंत्री और संयुक्त अरब अमीरात के उपराष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मक्तूम के साथ उच्चस्तरीय बैठक की। दोनों पक्षों में कोविड-19 के बाद और दोनों के पड़ोसी देशों में हालात के संदर्भ में भारत-यूएई के बीच आर्थिक साझेदारी के पहलुओं पर चर्चा हुई। बातचीत के दौरान भारत की ओर से मुख्य मुद्दा यूएई में रहने वाले

© 2025 लोकेंद्र सिंह शक्तावत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

33 लाख भारतीयों के कल्याण का था, खास तौर से कोविड-19 महामारी के दौरान।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारतीय समुदाय का ख्याल रखने के लिए शेख मोहम्मद को धन्यवाद दिया और रेखांकित किया कि इस मुश्किल वक्त में हर क्षेत्र में भारत यूएई का भरोसेमंद साझेदार रहा है। उन्होंने कोविड-19 के बाद सामान्य स्थिति बहाली में भारत सरकार की मदद को लेकर भी समुदाय को आश्वासन दिया। नरवणे की यूएई यात्रा इस मायने में ऐतिहासिक थी कि यह भारत के किसी सेना प्रमुख की इस देश में पहली यात्रा थी। उन्होंने यूएई के लैंड फोर्सेज एंड स्टाफ कमांडर मेजर जनरल सालेह मोहम्मद सालेह अल आमेरी से भेंट कर परस्पर हित के मुद्दों और रक्षा सहयोग पर बातचीत की। देश की आबादी का करीब 30 हिस्सा भारतीय हैं। इससे पहले मार्च में शहजादे शेख मोहम्मद बिन जायद अल नह्यान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकाता में महामारी के दौरान भारतीय समुदाय के स्वास्थ्य और सुरक्षा का ध्यान रखने का वादा किया था। दोनों नेताओं ने महामारी पर एक-दूसरे के साथ सूचनाओं और विचारों का आदान-प्रदान किया, अपने-अपने देश का हाल साझा किया और हालात पर नियंत्रण के लिए देश द्वारा उठाए गए कदमों पर चर्चा की।

भारत-यूएई द्विपक्षीय संबंध में विशेष दिलचस्पी रखने वाले जयशंकर ने कहा, ''यह ऐसा संबंध है जिसमें दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व ने साख और ऊर्जा का निवेश किया है। इसके परिणाम स्वरूप आप पिछले पांच साल में आए बदलावों को देख सकते हैं।'' भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच संबंध पिछले कुछ साल में बहुत मजबूत हुए हैं और दोनों देशों के नेता लगातार एक-दूसरे से बातचीत कर रहे हैं। यूएई भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है और दोनों देशों के बीच वार्षिक द्विपक्षीय संबंध 60 अरब डॉलर का है। खाड़ी देश भारत को बड़ी मात्रा में कच्चे तेल का निर्यात भी करता है। सितंबर में दुबई स्थित भारतीय वाणिज्य महादूत और टी-बोर्ड इंडिया ने यूएई में भारतीय चाय को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन बी2बी बैठक का आयोजन किया। यूएई ने कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई के लिए भारत को मई में सात मीट्रिक टन स्वास्थ्य सामग्री की आपूर्ति की थी। कोविड-19 के दौरान 'वंदे भारत मिशन' के तहत संयुक्त अरब अमीरात से 84,497 भारतीय नागरिकों को देश वापस ले जाया गया।

संयुक्त अरब अमीरात 18 अरब डॉलर के अनुमानित निवेश के साथ भारत में आठवां सबसे बड़ा निवेशक भी है। इसके अलावा, भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने हाल में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) में किया है जिसके तहत यूएई ने भारत में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 75 अरब डॉलर की प्रतिबद्धता जताई है। इसके अलावा, अक्टूबर 2021 में दुबई सरकार ने रियल एस्टेट, औद्योगिक पार्क, आईटी टावर, बहुउद्देश्यीय टावर, लॉजिस्टिक, मेडिकल कॉलेज, सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल आदि के विकास के लिए जम्मू-कश्मीर प्रशासन के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

भारत-यूएई सीईपीए दोनों देशों के बीच पहले से ही गहरे, घनिष्ठ और रणनीतिक संबंधों को और मजबूत करेगा। इसके अलावा यह समझौता दोनों देशों के लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा, जीवन स्तर को बेहतर करेगा और कल्याण में सुधार करेगा।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच संबंध तेजी से बढ़ रहे हैं और खाड़ी देश भारत के विस्तारित पड़ोस का केंद्र है। जयशंकर ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) तथा इसराइल के बीच कूटनीतिक संबंध सामान्य होने का स्वागत करते हुए कहा कि इससे देश के लिए बहुत से अवसर खुले हैं क्योंकि उसके दोनों देशों के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। जयशंकर ने कहा, ''भारत और यूएई के संबंध तेजी से बढ़ रहे हैं। यूएई भारत के विस्तारित पड़ोस का केंद्र है। हम यूएई को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के मार्ग पर देखते हैं। सिंगापुर पूर्व में तो पश्चिम में यूएई है।'' भारत-यूएई द्विपक्षीय संबंधों में विशेष रुचि लेने वाले विदेश मंत्री ने कहा, ''ये ऐसे संबंध हैं जिसमें दोनों देशों के सर्वोच्च नेतृत्व ने सद्भाव और ऊर्जा का निवेश किया है। परिणाम स्वरूप आप पिछले पांच साल में हुआ परिवर्तन देख सकते हैं।''

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच आर्थिक और व्यापारिक संबंध भी प्रगाढ़ हुए हैं और दोनों देशों के बीच आपसी व्यापार वर्ष 2021-22 में भारत- संयुक्त अरब अमीरात का कुल उत्पाद व्यापार 52.76 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का रहा जो संयुक्त अरब अमीरात को भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनाता है। दोनों देशों द्वारा अगले पाँच वर्षों में द्विपक्षीय उत्पाद व्यापार को 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर और सेवाओं के व्यापार को 15 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। दो देशों के बीच व्यापार समझौता दोतरफा निवेश प्रवाह का भी प्रवर्तन होता है। भारत में संयुक्त अरब अमीरात का निवेश लगभग 11.67 बिलियन अमेरिकी डॉलर आकलित किया गया है जो इसे भारत में नौवाँ सबसे बड़ा निवेशक देश बनाता है।

इसके अलावा, कई भारतीय कंपनियों ने UAE में संयुक्त उद्यम के रूप में या उसके विशेष आर्थिक क्षेत्रों में (सीमेंट, निर्माण सामग्री, वस्त्र, इंजीनियरिंग उत्पाद, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स आदि के लिये) अपनी विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित की हैं। कई भारतीय कंपनियों ने पर्यटन, आतिथ्य, खानपान, स्वास्थ्य, खुदरा क्षेत्र और शिक्षा के क्षेत्र में भी निवेश किया है।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के रिश्ते नई नई मंज़िलें तय कर रहे हैं। इसी साल फरवरी 2022 में शेख़ मोहम्मद बिन ज़ायद और प्रधानमंत्री मोदी ने वर्चुअल वार्ता की थी। इस दौरान दोनों देशों ने व्यापक आर्थिक साझेदारी के समझौते (CEPA) पर दस्तख़त किए थे। दोनों नेताओं ने भविष्य के लिहाज़ से बेहद अहम और एक महत्वाकांक्षी साझा विज़न स्टेटमेंट भी जारी किया था, जिसका नाम था; 'भारत और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) की व्यापक सामरिक साझेदारी को आगे बढ़ाना: नए मोर्चे, नई मंज़िलें'।

आर्थिक साझेदारी का व्यापक समझौता (CEPA), भारत और संयुक्त अरब अमीरात के रिश्तों की एक बड़ी उपलब्धि है जिसे सिर्फ़ 88 दिनों में अमली जामा पहना दिया गया और जिसके तहत दोनों देशों के व्यापार को अगले पांच वर्षों में 60 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। ये समझौता एक मई 2022 को लागू हो गया है और इसने व्यापार कर के दायरे में आने वाले 97 फ़ीसद मामलों में बाज़ार में पहुंच के मामले में तरज़ीह देने की शुरुआत कर दी है। इसके दायरे में भारत से संयुक्त अरब अमीरात को निर्यात होने वाले 99 प्रतिशत सामान आते हैं। उम्मीद की जा रही है कि इस समझौते से भारत को हीरे-जवाहरात, कपड़े, चमड़े के सामान, फुटवियर, खेल के सामान, प्लास्टिक, फर्नीचर, कृषि और लकड़ी के उत्पाद, इंजीनियरिंग के उत्पाद, दवाओं और मेडिकल उपकरणों और ऑटोमोबाइल के निर्यात में बहुत मदद मिलेगी। इस समझौते से भारत

© 2025 लोकेंद्र सिंह शक्तावत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

के सर्विस सेक्टर को संयुक्त अरब अमीरात के सेवा क्षेत्र के 11 व्यापक सेक्टर के 111 उप-क्षेत्रों तक पहुंच बना पाने में आसानी होगी।

हाल ही में, भारत-यूएई के बीच में राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भारत-यूएई संयुक्त स्मारक टिकट की एक भौतिक प्रति को जारी किया गया है। इस अवसर पर यूएई में भारत के राजदूत संजय सुधीर और अमीरात पोस्ट के सीईओ उपस्थित थे।

इससे पहले भारतीय पीएम मोदी और आबूधाबी के क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने फरवरी में भारत की स्वतंत्रता के 50 वें वर्ष को मनाने के अवसर पर एक संयुक्त स्मारक टिकट जारी किया था। दोनों नेताओं ने अपने संयुक्त वक्तव्य में दोनों देशों के बीच भविष्योन्मुखी साझेदारी विकसित करने के लिए एक रोडमैप स्थापित करने की बात भी कही गई है। दोनों देशों का साझा उद्देश्य अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, जलवायु कार्रवाई, उभरती प्रौद्योगिकियों, कौशल और शिक्षा, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, और रक्षा और सुरक्षा सहित विविध क्षेत्रों में गतिशील नए व्यापार, निवेश और नवाचार को भी बढ़ावा देना है। इस प्रकार दोनों देशों के उच्च स्तर के नेता भी इन आपसी संबंधों और साझेदारी को और भी मजबूत और आगे बढ़ाना चाहते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान में भारत और संयुक्त अरब अमीरात के रिश्ते नई-नई मंजिलें तय कर रहे हैं और पिछले कुछ वर्षों के दौरान, अरब देशों के बीच, संयुक्त अरब अमीरात, भारत का सबसे नजदीकी व्यापारिक और रणनीतिक साझीदार बनकर उभरा है। इस प्रकार भारत और संयुक्त अरब अमीरात उत्कृष्ट द्विपक्षीय संबंधों का लाभ उठा रहे हैं जिनकी जड़ें काफी गहरी, ऐतिहासिक और घनिष्ठ सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत समानताएं, लगातार उच्च स्तरीय राजनीतिक बातचीत एवं लोगों से लोगों के बीच जीवंत संबंधों द्वारा पोषित हैं।

संदर्भ

1. दीक्षित जेएन. इंडियाज फॉरेन पॉलिसी 1947–2003. दिल्ली: पिकस पब्लिकेशन; 2003.
2. राजा मोहन सी. क्रॉसिंग दी रुबिकन: दी शेपिंग ऑफ इंडियाज न्यू फॉरेन पॉलिसी. दिल्ली: पेंगुइन; 2003.
3. दास जीपी. इंडिया एंड वेस्ट एशिया ट्रेड इन एन्सिएंट टाइम्स: छठी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस; 2006.
4. इलियास एमएच, विन्सेंट पीजे. इंडिया–वेस्ट एशिया रिलेशन्स: अंडरस्टैंडिंग कल्चरल इंटरप्लेज. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस; 2007.
5. जैन पीसी. इंडियन डायस्पोरा इन वेस्ट एशिया: अ रीडर. दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स; 2007.
6. राजमोनी वी. इंडिया एंड दी यूएई: इन सेलिब्रेशन ऑफ अ लेजेंड्री फ्रेंडशिप. लंदन: लूस्टर; 2008.
7. आलम ए. इंडिया, ग्लोबल पॉवर्स एंड वेस्ट एशिया: पॉलिटिकल एंड इकोनॉमिक डायनामिक्स. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस; 2011.
8. वाधवानी आर. इंडिया एंड यूएई: इकोनॉमिक रिलेशन. दिल्ली: रितु पब्लिकेशन; 2013.
9. महमूद एफ, संपादक. फॉरेन पॉलिसी ऑफ इंडिया एंड वेस्ट एशिया: चेंज एंड कंटीन्यूटी. दिल्ली: न्यू सेंचुरी पब्लिकेशंस; 2014.
10. रॉय एमएस. इमर्जिंग ट्रेंड्स इन वेस्ट एशिया: रीजनल एंड ग्लोबल इम्प्लिकेशन्स. दिल्ली: पेंटागन प्रेस; 2014.
11. दहिया आर, संपादक. डेवलपमेंट्स इन दी गल्फ रीजन: प्रॉस्पेक्ट्स एंड चैलेंजेज फॉर इंडिया. दिल्ली: पेंटागन प्रेस; 2014.
12. गुप्ता आर. पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध: एक नए युग की शुरुआत. वाशिंगटन डीसी: मिडिल ईस्ट इंस्टिट्यूट; 2017.
13. गुएराइच डब्ल्यू. दी यूएई: जियोपॉलिटिक्स, मॉडर्निटी एंड ट्रेडिशन. न्यूयॉर्क: आईबी टॉरिस; 2017.
14. गांगुली एस. भारत की विदेश नीति: पुनरावलोकन एवं संभावनाएं. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2018.
15. अटवाल आरएस. इंडिया एंड वेस्ट एशिया. दिल्ली: ब्ल्यू रॉन पब्लिशिंग हाउस; 2019.
16. चतुर्वेदी एके. पश्चिम एशिया का इतिहास (1839–1945 ई.). दिल्ली: एसबीपीडी पब्लिकेशंस; 2019.
17. प्रधान पीके. इंडिया एंड दी अरब अनरेस्ट: चैलेंजेज, डिलेमाज एंड इंगेजमेंट्स. लंदन: राउटलेज; 2021.
18. जयशंकर एस. परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2021.
19. अहमद टी. वेस्ट एशिया एट वॉर: रिप्रेशन, रेसिस्टेंस एंड ग्रेट पावर गेम्स. दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स; 2022.
20. त्रिगुणायत ए. इवॉल्विंग सिक्योरिटी डायनैमिक्स इन वेस्ट एशिया एंड इंडियाज चैलेंजेज. दिल्ली: पेंटागन प्रेस; 2022.

शोध-आलेख (Vancouver Style – हिंदी)

21. गोयल एच. इंडिया के यूएई के साथ वस्तु निर्यात का पोस्ट-रिफॉर्म युग में विश्लेषण. Zenith Int J Bus Econ Manag Res. 2015;5(10):65–76.
22. बर्मन ए. इंडिया-यूएई निवेश और व्यापार संबंध: व्यावहारिकता बनाम प्रचार. Diplomacy and Beyond (Special Report). 2016;36–39.
23. गोयल केए, वाजिद ए. भारत और यूएई के बीच द्विपक्षीय व्यापार का विश्लेषण. Pac Bus Rev Int. 2016;9(1).
24. आलम आई, अहमद एस. इंडिया-यूएई व्यापार पहेली का विश्लेषणात्मक अध्ययन. Empirical Econ Lett. 2017;16(12):1255–1266.
25. रॉय एमएस, कमर एम. इंडिया-यूएई संबंध: रणनीतिक साझेदारी का नया आयाम. IDSA Issue Brief. 2017;(17).
26. अंजुम एफ. इंडिया-यूएई: उभरती रणनीतिक साझेदारी. Eur J Soc Sci Stud. 2017;2(5).
27. गोयल केए, वाजिद ए. भारत-यूएई व्यापार तीव्रता का विश्लेषण. J Commer Trade. 2018;13(1):27–31.
28. कमर एम. इंडिया और यूएई: व्यापक रणनीतिक साझेदारी की ओर. IDSA Issue Brief. 2018 Jul 5.
29. सियेच एमएस. इंडिया-यूएई संबंधों का अवलोकन. Future Adv Res Stud. 2018;(10).
30. प्रशांत टीआर, कुमार केवी. भारत-यूएई द्विपक्षीय व्यापार संबंध: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. Glob J Manag Bus Stud. 2020;10(1):1–7.
31. प्रधान पीके. इंडिया-यूएई सुरक्षा संबंध. Strategic Analysis. 2020;44(2):125–136.

© 2025 लोकेंद्र सिंह शक्तावत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

32. कुमार केवी. भारत-यूएई आर्थिक एवं रणनीतिक संबंधों के नए क्षितिज. Int J Creat Res Thoughts. 2020;8(8):858–892.
33. बलारेल एन. मोदी लुक्स वेस्ट? भारत की मिडिल ईस्ट नीति का आकलन. Int Politics. 2021;59:90–111.
34. कुमार केवी, प्रशांत टीआर. यूएई में भारतीय प्रवासी: एक अध्ययन. Ann Romanian Soc Cell Biol. 2021;25(4):3554–3567.
35. शाहजेब एसएम, कुशवाहा एच, मसूद टी. भारत-यूएई निर्यात क्षमता का अध्ययन. Saudi J Econ Finance. 2021;5(1):16–27.
36. प्रिया एल. इंडिया-यूएई आर्थिक संबंध: CEPA के माध्यम से. ICWA Commentary. 2022 Jun 3.
37. वर्मा ए, द्विवेदी ए. सहकारी रणनीतिक साझेदारी. NIICE Commentary. 2022 Mar 10;7688.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 लोकेंद्र सिंह शक्तावत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/